: ३ :

जायसी का सौंदर्य-चित्रण

जायसी के 'पद्मावत' की सारी कथा का आधार प्रेम और सौन्दर्य है, जिसके आश्रय से कवि ने अपने विचारों तथा सूफी सिद्धांतों को वाणी दी है। जिस प्रकार सूफियों ने ईश्वर की कल्पना नारी के रूप में की है उसी प्रकार जायसी ने पद्मवाती के रूप में ईश्वर या परमसत्ता की प्रेममय कल्पना करके उसे अनन्त सौन्दर्य-राशि से मंडित करके अपने काव्य में प्रस्तुत किया है। इसी भावना के अनुकूल कवि ने पद्मावती के सौन्दर्य-वर्णन में अधिक-से अधिक उत्कृष्ट अप्रस्तुतों का विधान किया है। 'पद्मावत' में केवल पद्मावती के रूप-सौन्दर्य का ही चित्रण मिलता है। इस दृष्टि से उसका सर्वत्र एक अलौकिक आभा से दीप्त रूप में प्रस्तुतीकरण स्वाभाविक ही है।

जायसी का सौन्दर्य-चित्रण:प्रमुख विशेषताएँ :

जायसी के रूप-सौन्दर्य-चित्रण पर विचार करते समय हमें उनकी निम्नलिखित विशेषताएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं—

१. सौन्दर्य की लोकोत्तर कल्पना और सृष्टिव्यापी प्रभाव।

२. नख-शिख प्रणाली।

३. सादृश्यमूलक रूप-वर्णन।

४. अलंकृत रूप-वर्णन।

इन विशेषताओं के अन्तर्गत जायसी के सौन्दर्य-चित्रण का सम्पूर्ण रूप से समावेश किया जा सकता है। अतः यहां इन्हीं पर विचार किया जा रहा है।

सौन्दर्य की लोकोत्तर कल्पना : सृष्टिव्यापी प्रभाव

जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है. पद्मावती का यह रूप-वर्णन अधिकांश में लोकोत्तर या औकिक रूप में किया गया है। पद्मावती ब्रह्म की प्रतीक है। उसी के माध्यम से कवि ने ईश्वर की प्रेम और सौन्दर्यमय कल्पना की है। पद्मावती

का यह रूप-वर्णन पाठकों को सौन्दर्य की लोकोत्तर कल्पना में मग्न करने वाला है। उस अलौकिक रूप के प्रभाव से राजा रत्नसेन उसी प्रकार भावाविष्टावस्था की स्थिति को प्राप्त हो जाता है, जिस प्रकार साधक भक्त परमसत्ता के दिव्य और अपरिमित सौन्दर्य पर मुग्ध होता है। जायसी ने लिखा है—

सुनतहि राजा गा मुरझाई। जानौं लहरि सुरुज कै आई॥

इसके पश्चात् कवि ने सौन्दर्य की लोकोत्तरता के अनुकूल ही रत्नसेन-रूपी भक्त के हृदय में भावाविष्टावस्था की अधिक रमणीय अभिव्यक्ति की है—

अहुठ हाथ तन सरवर, हिया कँवल तेहि माँह।
नैनन्हि जानहुं नियरे, कर पहुँचत अवगाह॥

बिरह भँवर होइ भाँवरि देई। खिन खिन जीव हिलोरहिं लेई॥
खिनहि निसास बूड़ि जनु जाई। खिनहि उठै बिसरै बौराई॥
खिनहिं पीत खिन होइ मुख सेता। खिनहि चेत खिन होइ अचेता॥

अब इस लोकोत्तर रूप के कुछ चित्रों को ले सकते हैं। जायसी ने पद्मावती के अंग-प्रत्यंगों का वर्णन अलौकिक का लोकोत्तर रूप में ही किया है, जिस की सबसे प्रमुख विशेषता है—उसकी सृष्टि-व्यापी प्रभाव। जायसी ने पद्मावती के अप्रतिम रूप को 'पारस-रूप' की संज्ञा दी है, जिसके आभास-मात्र से संसार को सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। 'मानसरोदक-खंड' में कवि ने इसी 'पारस-रूप' के वर्णन में उसके लोकोत्तर और सृष्टि-व्यापी प्रभाव का एक संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत किया है। इस पारस-रूप' के वणन में उसके लोकोत्तर और सृष्टि-व्यापी प्रभाव का एक संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत किया है। इस पारस-रूप के प्रभाव से मानसर की की कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं, उसी के निर्मल चरणों के स्पर्श-मात्र से रूप की प्राप्ति होती है, उसके शरीर से आनेवाली मलय-वायु के स्पर्श से शरीर की तपन बुझ जाती है, तन शीतल हो जाता है, और संसार के सारे पदार्थों को उसी की छटा अपनी आभा से दीप्त कर देती है—

कहा मानसर चाह सो पाई। पारस रूप इहाँ लगि आई॥
भा निरमल तेन्ह पायन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे॥
मलय समीर बास तन आई। भा सीतल गै तपनि बुझाई॥

× × ×

बिगसा कुमुद देखि ससि रेखा। भै तहँ ओप जहाँ जो देखा॥
पावा रूप रूप जस चाहा। ससि मुख जनु दरपन होइ रहा॥
नयन जो देखा कँवल भा? निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नगहीर॥

आचार्य पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने जायसी के रूप-वर्णन के सम्बन्ध में लिखा है, "केशों की दीर्घता, सघनता और श्यामता के वर्णन के लिए परम्परा से प्रचलित

पद्धति के अनुसार केवल सादृश्य पर जोर न देकर कवि ने उसके सृष्टि-व्यापी प्रभाव की ओर संकेत किया है।" पद्मावती के केशों की श्यामता से संसार पर बादलों की छाया छा जाती है, सारे संसार में अंधेरा हो जाता है। उसके नेत्रों की पुतलियों के डोलने से सारा संसार डोलायमान हो उठता है—

सरवर तीर पदमिनी आई। खोंपा छोरि केस मुकुलाई॥
ओनई घटा परी जग छाहाँ। ससि कै सरन लीन्ह जनु राहाँ॥

× × ×

बेनी छोरि झोर जौं बारा। सरग पतार होइ अंधियारा।

× × ×

जग डोलै डोलत नैनाहाँ। उलटि अपार जाहिं पल माहाँ॥

अंग-प्रत्यंगों के परम्परा वर्णन में भी कवि ने सौन्दर्य के सृष्टि-व्यापी प्रभाव की व्यञ्जना पर ही अपनी विशेष दृष्टि रखी है। जायसी सभी वर्णनों में सौन्दर्य की लोकोत्तरता की ओर संकेत करते चलते हैं। काले-केशों के बीच माँग की शोभा का वर्णन देखिये—

कंवन रेख कसौटी कसी। जनु घन महँ दामिनि परगसी॥
सुरुज किरण जनु गगन बिसेखी। जमुना माँझ सुरसती देखी॥

कहीं-कहीं कवि ने सारे संसार की शोभा की उसी परम सत्ता-रूप पद्मावती, की शोभा के प्रतिबिम्ब के रूप में चित्रित किया है। पद्मावती दाँतों की शोभा का यह वर्णन इसी प्रकार का है—

जेहि दिन बसन जोति निरमई। बहुतै जोति जोति ओहि भई॥
रवि ससि नखत दिपहिं ओहि जोती। रतन पदारथ मानिक मोती॥
जहँ जहँ बिहँसि सुभावहि हँसी। तहँ तहँ छिटकि जोति परगसी॥

इस संबंध में आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल का निम्नलिखित कथन द्रष्टव्य है। "यहाँ पद्मावती का रूप-वर्णन करते करते फिर अनंत-सत्ता की ओर कवि की दृष्टि जा पड़ी है। जिसकी भावना संसार के सारे रूपों को भेदती हुई इस मूल-सौन्दर्य-सत्ता का कुछ आभास पा चुकी है, वह सृष्टि के सारे सुन्दर पदार्थों में उसी का प्रतिबिम्ब देखता है।" इस दृष्टि से 'पद्मावत' की कुछ पंक्तियाँ और द्रष्टव्य हैं—

ओहै श्याम धनुक जनु ताना। जा सहुँ हेर हनै बिष बाना॥
उहै धनुक किरसुन पै अहा। उहै धनुक राघौ कर गहा॥
ओहि धनुक रावन संघारा। ओहि धनुक कंसासुर मारा॥

× × ×

बरनी का बरनौं इमि बनी। साधे बान जानु दुइ अनी॥

× × ×

उन बानन्ह अस को जो न मारा। बेधि रहा सगरौ संसारा॥

गगन नखत जो जाहिं न गने। वे सब बान ओहि के हने॥
धरनी कान बेधि सब राखी। साख ठाढ़ि देहिं सब साखी॥

रूप-सौन्दर्य के चित्रण में जायसी का ध्यान सदैव इस ओर रहा है कि सौन्दर्य अपने चरम रूप में व्यक्त हो सके। कवि कवि को 'पद्मावत' में नारी-सौन्दर्य का एक ऐसा चित्र प्रस्तुत करना था जो रूप और-सौन्दर्य की प्रतिमा हो। प्रस्तुत करना था जो रूप और सौन्दर्य की प्रतिमा हो। अप्रस्तुत अर्थ में पद्मावती परम-सत्ता की प्रतीक है, और जायसी का लक्ष्य पद्मावती के रूप-वर्णन द्वारा उसी परम-ज्योति के अपरिमित सौन्दर्य का वर्णन करना है। जायसी के सामने वही दृष्टिकोण रहने से उनके मन में नारी-सौन्दर्य की कोई निश्चित मूर्ति नहीं थी, यही कारण है कि 'पद्मावत' में पद्मावती का विस्तृत नख-शिख-वर्णन करने के पश्चात् भी पद्मावती का कोई निश्चित आकार पाठकों के मन में नहीं जमता। कवि ने 'पद्मावत' में पद्मावती के रूप-सौन्दर्य-चित्रण को चरम उत्कर्ष प्रदान करने के लिए संसार की सुन्दरतम वस्तुओं के उपमान के रूप में सामने ला रक्खा है। जायसी ने अपने काव्य में सौन्दर्य-चित्रण के अन्तर्गत उन्हीं वस्तुओं को उपमान के रूप में चुना है, जिनसे सौन्दर्यानुभूति की तीव्रतम अभिव्यंजना का जा सके। यहाँ केवल एक चित्र दिया था रहा है, जिसमें कवि ने उपयुक्त उपमानों से सौन्दर्य की लोकोत्तर व्यंजना की है—

भै उनन्द पद्मावति बारी। रचि रचि विधि सब कला सँवारी॥
जग बेधा तेहि अंग सुबासा। भँवरु आइ लुबधें चहुँ पासा॥
बेनी माग मलैगिरि बैठी। ससि माथे होइ दूइज पैठी॥
भौंह धनुख साधे सिर फेरें। नयन कुरंग भूलि जनु हेरें॥
नासिक कीर कँवल मुख सोहा। पदमिनि रूप देखि जग मोहा॥
मानिक अधर, दसन जनु हीरा। हिय हुलसे कुच कनक गँभीरा॥
केहरि लंक, गवन गज हारे। सुर नर देखि माथ भुइँ धारे॥
जग कोइ दीठि न जावँ, आछहिं नैन अकास।
जोगी, जती, सन्यासी, तप साधहिं तेहि आस॥

जायसी ने कहीं-कहीं सौन्दर्य की बड़ी सूक्ष्म और संक्षिप्त अभिव्यक्तियाँ भी की हैं। ऐसे स्थानों पर बड़ी ही रमणीय और गूढ़ अभिव्यंजना देखने को मिलती निम्नलिखित पंक्तियों में एक चित्र प्रस्तुत है। पद्मावती के हँसने से उसके रक्तिम वर्ण होंठों और श्वेत दन्त-पंक्ति की आभा उसकी मधुर-श्वेत, और अरुण-ज्योति के समान संसार में प्रकाशित हो उठती है और सारा संसार उसके हास से खिल उठता है—

हीरा लेइ सो बिद्रुम धारा। बिहँसत जगत होइ उजियारा॥

इस प्रकार जायसी के सौन्दर्य-चित्रण की सबसे प्रमुख विशेषता लोकोत्तर और चरम सौन्दर्य की व्यंजना है, जिसमें कवि पूर्णरूपेण सफल सफल हुआ है।

सौन्दर्य की नखशिख-प्रणाली

'पद्मावत' में कवि ने पद्मावती की सौन्दर्य-चित्रण परम्परागत नखशिख प्रणाली पर किया है, जिस में कवि क्रम से एक-एक अंग के सौन्दर्य का उद्घाटन करता चलता है, कोई संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत नहीं करता। कवि ने 'पद्मावत' में अलग-अलग नासिका, कान, नयन, मुख आदि का वर्णन किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

केशों का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

अथमहि सीस कस्तूरी केसा। बलि बासुकि को और नरेसा॥
भँवर केस वह मालति रानी। बिसहर लुरहिं लेहिं अरधानी॥
बेनी छोरि झार जौं बारा। सरग पतार होइ अँधियारा॥
कोंवल कुटिल केस मग कारे। लहरन्हि भरे भुअंग बिसारे॥

इसी प्रकार माँग का यह वर्णन देखिये—

बरनौं माँग सीस उपराहीं। सेंदुर, अबहि चढ़ा तेहि नाहीं॥
बिनु सेंदुर अस जानहुँ दिया। उजियर पंथ रैनि महँ किया॥
कंचन रेख कसौटी कसी। जनु घन महँ दामिनि परगसी॥
सुरुज किरन जसु गगन बिसेखी। जमुना माँझ सुरसती देखी॥

जायसी ने इसी क्रम से केशों, माँग, ललाट, भौंहों, नेत्र, बरौनियों, नासिका, अधर, दन्तपंक्ति, रसना, कपोल, श्रवण, ग्रीवा, भुजा, कुच आदि अंगों का सविस्तार उद्घाटन किया है। कवि ने इस नख-शिख वर्णन में अपने प्रकार से एक ही वस्तु का चित्र उतारा है, परन्तु उनमें की पुनरुक्ति या शिथिलता का भान भी नहीं। नख-शिख वर्णन के अन्तर्गत ही उरोजों का वर्णन भी द्रष्टव्य है—

हिया थार कुच कंचन लाडू। कनक कचोर उठे करि चाडू॥
कुन्दन बेल साजि जनु कूंदे। अंबित भरे रतन दोइ मूंदे॥
बेधे भँवर कंट के तुकी। चाहहिं बेध कीन्ह कंचुकी॥
जोबन बान लेहिं नहिं बागा। चाहहिं हुलसि हिएं हटि लागा॥

यत्र-तत्र संश्लिष्ट चित्रण

जायसी ने कहीं-कहीं परम्परागत नखशिख-प्रणाली से अलग हटकर सौंदर्य के संश्लिष्ट चित्र भी प्रस्तुत किया है। इस प्रकार का एक चित्र हमें लक्ष्मी-समुद्र-खण्ड में मिलता है। कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

कनकलता दुइ नारंग फरी। तेहि के भार उठि होइ न खरी॥

× × ×

रही मृनाल टेकि दुख-दाधी। आधी कंवल, भई ससि आधी॥

अलंकरण और सादृश्यमूलक रूप-वर्णन

जायसी ने नख-शिख वर्णन में उपमानों का विशेष आश्रय लिया है। इस प्रकार उनके रूप-वर्णन की एक प्रमुख विशेषता है—अलंकृत रूप-वर्णन। इस अलंकरण-पद्धति

में जायसी ने सादृश्यमूलक अलंकारों का सर्वथा सार्थक प्रयोग किया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि काव्य में सादृश्य की योजना दो दृष्टियों से की जाती है—एक—स्वरूप-बोध के लिए, दूसरे—भाव-तीव्रता के लिए। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सादृश्य योजना इस प्रकार की होनी चाहिये कि प्रस्तुत वस्तु-नायिका के रूप-सौन्दर्य की रमणीयता बनी रहे। जायसी की सादृश्य-योजना पद्मावती के अलौकिक की अभिव्यक्ति में पूर्णरूपेण सक्षम है।

यहाँ जायसी की सादृश्य-योजना की उपयुक्तता प्रमाणित करने के लिए एक उदाहरण दिया जा रहा हैं। रोमावली का वर्णन है। कवि ने रोमावली की उपमा एक श्याम-सर्पिणी से दी है। वह श्याम-सर्पिणी कमल कमल की सुगन्ध से आगे बढ़ी, परन्तु दो नारंगियों के बीच में पहुंचने पर ठिठक गई, आगे नहीं बढ़ सकी। पंक्तियां इस प्रकार है—

स्याम भुअंगिनि रोमावली। नाभी निकसि कंवल कहं चली॥
आइ दुओ नारंग बिच भई। देखि मयूर ठनकि रहि गई॥

इन पंक्तियों में कवि ने एक साथ नारी-शरीर सम्बन्धी अपने सूक्ष्म निरीक्षण और प्रकृति-पर्यवेक्षण का परिचय दिया है। यह उल्लेखनीय है कि मयूर और सर्प का जन्मजात वैर है।

अलंकृत रूप-वर्णनों में कवि ने एक-एक अंग के लिए कई उपमानों की योजना की है, जैसे—

केशराशि के लिए—नाग, नागिन, कस्तूरी, प्रेम-जंजीर, भ्रमर, राहु, सर्प, तरंगमयी यमुना आदि।

मांग के लिए—सरस्वती, वीर बहूटी, विद्युत-लेखा, आरक्त असि, कंचन-रेखा, सूर्य-किरण आदि।

नेत्रों के लिए—रक्त कमल, भ्रमर, खंजन, मृग, तुरंग, तरंग और माणिक्य आदि।

उरोजों के लिए—कंचन लड्डू, कनक-कचौड़ी, नारंगी, जंभीर, श्रीफल, तुरंग, लट्टू आदि।

सौन्दर्य-वर्णन में कवि ने प्रायः अनलंकृत वर्णन कहीं भी नहीं किये हैं। नारी सौन्दर्य की नितान्त रमणीय और अलंकृत झांकियां हमें जायसी के काव्य में प्रचुर मात्रा में और स्थान-स्थान पर मिल जायेंगी।

उपसंहार

इस प्रकार जायसी ने शृंगार के आलम्बन के रूप में नारी-शरीर की मोहक और रमणीय, लौकिक और अलौकिक अनेक प्रकार की भव्य झाँकियाँ 'पद्मावत' में प्रस्तुत की हैं। पद्मावती को ईश्वरीय सत्ता के रूप में कल्पित करके जहाँ एक ओर कवि-सौन्दर्य की लोकोत्तर व्यंजना करता है, वहाँ वह दूसरी ओर सौन्दर्य के पूर्णरूप

स्वाभाविक चित्र भी प्रस्तुत करता है। दोनों ही रूपों में अवंकरण की प्रधानता जायसी की विशेषता है। जायसी के सौन्दर्य-चित्र पाठक को एक ओर तो सौन्दर्य की लोकोत्तर कल्पना में मग्न करने वाले हैं, तो दूसरी ओर वे रमणी के मोक कलेवर के मादक और उत्तेजक चित्र भी बन पड़े हैं। इस विवेचन की पृष्ठभूमि में हम यह निस्संकोच रूप से कह सकते हैं कि नारी-शरीर के लौकिक और अलौकि,क भौतिक और लोकोत्तर दोनों दृष्टियों से जितने मोहक, रमणीय, सजीव, मादक, जीवन्त सौन्दर्य-चित्र-जायसी में मिल जाते हैं, उतने अन्यत्र नहीं। इस दृष्टि से सौन्दर्य-चित्रण में जायसी मध्यकाल के अन्यतम कवि हैं।

———